और बाते केती कहों, सब हुआ इन वास्ते ।
सो तुम जाहिर देखोगे, दिल अपनी नजर से ये ॥७१॥

और भी जो कुछ संसार में श्री राज जी महाराज की मेहर हुई है, वो सब मोमिनों के वास्ते ही हुई है और वो सब अब तुम अपने इस तन की नजरों से देखोगे और आपकी आतम इसका अनुभव करेगी।

महामत कहे ए साथ जी, सुनो जिकर सुभान ।
ए सिफत ईमान की, लाल जिनको भई पहिचान ॥७२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! जो श्री राज जी महाराज ने परमधाम की अखण्ड वाणी में तुम्हारा जिक्र किया है, उसको सुनो । ये बात बड़े ईमान की है । वही इसको सुन सकेंगे, जिनको अपने धाम धनी राज जी महाराज की पहचान हो गई और धनी पर ईमान आ गया है ।

(प्रकरण ६६, चौपाई ३९६७)

चौथा पहर

अब कहूं पोहोर चौथे की, बीतक जो सैयन ।
सो दिल के कानों सुनियो, करत हों रोसन ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब चौथा पहर, जो दोपहर के ३ बजे से सांय ६ बजे तक होता है, उसमें मोमिनों ने अपने धाम धनी श्री प्राणनाथ जी की जिस प्रकार सेवा की, वह बीतक लिखते हैं । उसको अपने दिल के कानों से सुनना ।

इत एक पहर पिउ पौढ़त, आये सेवन को सब साथ ।
जल लोटा भर ल्याइया, छबीलदास अपने हाथ ॥२॥

आप श्री जी बंगला जी में एक पहर १२ से ३ विश्राम करते हैं । फिर ३ बजे सब सेवा करने वाले सुंदरसाथ हाजिर हो जाते हैं । इस समय छबीलदास जल का लोटा भर कर ले आते हैं ।

श्री राज कोगला करत हैं, डारत हैं पीक दान ।
संकर आगे धरत हैं, संग सन्तदास परवान ॥३॥

आप श्री जी पलंग से उठ कर जल से कुल्ला करते हैं और पीक दान में डालते हैं । शंकर और संतदास पीकदान पकड़ कर खड़े हैं ।

Njanand App

मानक दौड़े इन समें, हजूर पहुंची आए ।
ए सब सेवा में सामिल, कछू अरज पहुंचाए ॥४॥

माणिक बाई इस समय दौड़कर सेवा में हाजिर होती हैं और ये सब सेवा में शामिल होती हैं तथा अवसर देखकर श्री राज जी से विनती करती हैं ।

श्री राज रजा देत हैं, आए हजूरी सब ।
संकर सेवे सनेह सों, मोरछल लिए तब ॥५॥

आप श्री जी उसे आज्ञा देते हैं । इस समय और भी सेवा करने वाले सुन्दरसाथ हाजिर हो जाते हैं। शंकर भाई बड़े स्नेह प्रेम के साथ मोरछल झुला रहे हैं ।

हजूर हमेसा रहे, ए जो केसव दास ।
कंचन मूठे मोरछल, सनेह सों सेवा खास ॥६॥

शंकरभाई सदा सोने की मुट्टी से जड़ा मोरछल लेकर श्री जी के चरणों में झुलाने के लिए हाजिर रहता है।

बल्लभ गंगादास जो, रहत हजूर हमेस ।
निरगुन हो के रहत हैं, माया नहीं लवलेस ॥७॥

वल्लभ और गंगादास सदा फकीरी भेष में श्री जी के चरणों में सेवा के लिए हाजिर रहते हैं । ये दोनों बिल्कुल माया को त्याग कर सेवा में अर्पित रहते हैं ।

बिहारीदास हमेसा, रहे हजूर हक ।
सब कामों में दौड़त, बड़ी सेवा बुजरक ॥८॥

सेवा में ही सब सुख हैं । ये दिल में भाव लेकर बिहारी दास सब सेवा में दौड़-दौड़कर शामिल रहता है।

लालदास हजूर में, मकरन्द इनके साथ ।
नीमा पहिनाया प्रेमदास, कस बांधे दोऊ हाथ ॥९॥

इस समय प्रेमदास छोटी गर्म कुर्ती श्री जी को पहनाते हैं । लालदास व मकरन्द दास जो सदा श्री जी के चरणों में ही हाजिर रहते हैं, ये दोनों कुर्ती के कस बांधते हैं ।

धरत हैं सिर पर, गोटा पहिनावत नन्द राम ।
गोस पेंच सिर ऊपर, आये मुकुन्द दास इन ठाम ॥१०॥

श्री जी साहिब के सिर पर गोटा लगी सुनहरी पट्टी नंदराम बांधते हैं । मुकुन्द दास आकर ऊपर से गोसपेच (एक कपड़े की जरी की हुई पट्टी) मुकुट की भांति सजावट वाली बांधते हैं ।

Nijanand App

दुता सुपेत कंचन का, पहिनावत ऊपर ।
रामचन्द्र हैं सामिल, सेवा नन्दराम यों कर ॥११॥

फिर उसके ऊपर कंचन का सफेद दूता पहनाते हैं । इस सेवा में रामचंद्र और नंदराम भाई शामिल होते हैं ।

पटका कमर सों बांधत, जरी किनारी झलकत ।
थुरमा ओढ़े कुरती पर, सोभे सुनहरी बूटे इत ॥१२॥

फिर श्री जी की कमर में पटुका बांधते हैं जिसकी किनारी जरी से निकली चमक रही है । फिर कुर्ती के ऊपर सुनहरी बूटी से कढ़ाई की हुई गर्म लोई (शाल) ओढ़ाई जाती है ।

तकिए मखमली ल्याइया, ए जो बिहारी दास ।
कोई दिन सेवा करी, मिल बन्दे फरास ॥१३॥

मखमली तकिए इस समय बिहारी दास जी लेकर आते हैं और कुछ दिन तक इस सेवा को बिहारी दास फराश ने करके अपने धनी को रिझाया ।

मेघा इनके संग रहे, और सुकाली सेवे ।
गोविन्ददास बदले, और बिसंभर सेवा करें ॥१४॥

कुछ दिन इस सेवा में मेघा, सुकाली, गोविन्ददास, शेखबदल और विशम्भर भाई शामिल हो कर अपने धनी को रिझाते हैं ।

भाई बनमाली दास नें, ए जो बनाया तखत ।
हवाले रहे बिहारी दास के, गादी तकिए धरें इत ॥१५॥

बनमाली दास ने बहुत सुन्दर एक तख्त बनाया, जो बिहारी दास जी के पास रहता है और उस पर वह गादी तकिए रख कर सेज सजाने की सेवा करते हैं ।

धनजी गावने में रहे, बनमाली दास के संग ।
तखत कुरसी सेज सेवा, करें सामिल हो उछरंग ॥१६॥

बनमाली दास के साथ गाने की सेवा में धन जी भी शामिल रहता है और तख्त, कुर्सी और सेज सजाने की सेवा में भी बड़ी उमंग के साथ शामिल होता है ।

सेज पर से उठके, कोई दिन घर जावे घनस्याम ।
तहां पांवड़े आगे बिछावत, ए लाल बाई का काम ॥१७॥

तीसरे पहर आप श्री जी साहिब कभी-कभी देह-क्रिया के लिए घनश्याम भाई के घर जाते हैं । तब चरण कमलों में पांवड़ा बिछाने की सेवा लालबाई करती हैं ।

Nijanand App

और बिछावत किसनी, एक पाँवड़ा जित ।
फुम्मक चंद्रवा बांधत, मानिक बाई तित ॥१८॥

और एक पांवड़ा किश्नी भी बिछाती हैं । सेतखाने (देहक्रिया का स्थान) के ऊपर फुम्मक लगा चंद्रवा बांधने की सेवा माणिक बाई करती हैं ।

तिन सेवा के सामिल, गंगादास सोभादास ।
इन सेवा बराबरी, कोई न पहुंचे खास ॥१९॥

इनके साथ गंगादास आर शोभादास भी इस सेवा में शामिल रहते हैं । सेवा के समान और कोई बंदगी नहीं है जो श्री राज जी तक पहुंचे ।

इत हाथ पकड़ के, लच्छीदास ल्यावे ।
पीछे फिरते हाथ दे, लालदास पहुंचावें ॥२०॥

जब पलंग से उठकर आप श्री जी चलते हैं तो लच्छीदास हाथ पकड़ते हैं और वापस आते समय लालदास जी सेवा में हाजिर रहते हैं ।

प्रेमदास चिंता गले लिए, सेवन को सब साज ।
बातें करें बनाए के, सबे राज के काज ॥२१॥

इधर प्रेमदास नाई बाल बनाने की सेवा के लिए अपने गले में पेटी, जिसमें बाल बनाने का सब सामान है, लेकर हाजिर है और बाल बनाते समय श्री जी से प्यार भरी बातें कर उन्हें रिझाता है ।

लटके मटके चलते, आए बैठे गादिए ।
ए सेवा बिहारीदास की, बिछाई है भर के ॥२२॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी लटकनी मटकनी चाल से चलते हुए वहां से आकर गादी पर विराजमान हुए । गादी सजा कर बिछाने की सेवा बिहारीदास जी की है, जिसकी शोभा अपरम्पार है ।

धरे दोऊ बाजू तकिए, ऊपर पाँवड़े चलत ।
पगथिए चरन धर के, आए कुरसी बिराजत ॥२३॥

गादी के दोनों तरफ तकिए रखे हुए हैं । श्री जी पांवड़ों पर चलकर सीढ़ी पर चढ़ कर कुर्सी पर आकर विराजमान होते हैं ।

Nijanand App

चरन पखालनें को छबीलदास, ल्यावत सुन्दर जल ।
मुकन्द दास खास पखालत, ए सेवत दिल निरमल ॥२४॥

चरण कमल धोने के लिए छबीलदास भाई सुंदर जल लेकर आते हैं। मुकुन्ददास बड़े निर्मल दिल के साथ चरण कमल धोते हैं।

दूजा पखालें प्रेमदास, पीछे केसव रूमाल ले ।
नारायण ता ऊपर, रूमाल देवें कर सनेह ॥२५॥

दूसरा चरण प्रेमदास भाई धोते हैं और चरण कमलों को पोंछने के लिए केशवभाई रूमाल लेकर खड़े हैं। फिर एक और रूमाल नारायण भाई बड़े स्नेह से सेवा के लिए देते हैं।

दोइ बाजू पिंडुरी, पकड़त बनमाली दास ।
लालदास सामल, लिए सेवन की दिल आस ॥२६॥

दोनों चरण कमलों की पिण्डलियों को बनमालीदास और लालदास पकड़ने की सेवा करते हैं।

इत चिलमची धर के, बैठत हैं नन्द राम ।
जल प्रसादी बांटत, संकर को ए काम ॥२७॥

चरण कमलों के नीचे नंदराम चिरमची लेकर बैठे हैं। चरण धुलाने के बाद शंकरभाई चरणामृत बांटते हैं। ये खास इनकी ही सेवा होती है।

हाथ पखालत हेत सों, छबीलदास रेड़े जल ।
हाथ पोंछावे रूमाल सों, प्रेमदास निरमल ॥२८॥

बड़े हेत, प्यार के साथ दोनों हस्तकमल धुलाए जाते हैं और छबीलदास जल डालते हैं, फिर प्रेमदास और निर्मलदास हाथ पोंछाने की सेवा करते हैं।

अमल आरोगें इन समें, इत छबीलदास देवे ।
फोफल आरोगन को, मानक ले पहुंचावें ॥२९॥

इस समय छबीलदास कहवा आरोगाने के लिए ले आते हैं और मुखवास के लिए सुपारी इत्यादि लाने की सेवा माणिक भाई करते हैं।

कुरसी गिरद घेर के, अम्बो और गौरी ।
और मानवंती मान सों, और गोदावरी ॥३०॥

कुर्सी को घेर कर अम्बो, गौरी, गोदावरी और मानवंती बड़े मान के साथ खड़ी हैं।

Nijanand App

दुरगी ललिता आइयो, सुआ खिमाई सांम ।
लच्छी और मन गमता, मातेन जहूर इस ठाम ॥३१॥

और दुर्गी, ललिता, सुआ, खिमाई, सामबाई, लच्छी, मनगमता, मातेनबाई और जहूरबाई भी खड़ी हैं।

और बाजू सखियां खड़ी, कुरसी को घेर के ।
संकर मथुरा गावत, गंगादास बिहारी झीलें ॥३२॥

और भी बहुत सुंदरसाथ घेरकर खड़े हैं । इस समय वाणी गाने की सेवा शंकर और मथुरा करते हैं। गंगादास और बिहारी पीछे दोहराकर वाणी गाने की सेवा करते हैं ।

कासी हाथ पकड़त, बैठत कुरसी बखत ।
ओका कलंगी हाजिर करे, जब बैठे श्री राज तखत ॥३३॥

आप धाम के धनी जब कुर्सी पर विराजमान होते हैं तो काशीभाई हाथ पकड़कर बिठाने की सेवा करते हैं । जब श्री जी तख्त पर विराजमान होते हैं तो ओका, सिर पर कलंगी लगाने के लिए लेकर हाजिर होते हैं ।

इत बिहार कई भांत के, आवे नहीं जुबान ।
सैयों को सुख देत हैं, कराए अपनी पहिचान ॥३४॥

इस समय कई प्रकार के आनंद मंगल बंगला जी में होते हैं, जिनका वर्णन नहीं हो सकता । आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी अपने स्वरूप की पहचान कराते हैं तो सुंदरसाथ सेवा करके अखण्ड सुख लेते हैं ।

बल्लभ छत्र पकड़ के, फेरत सिर ऊपर ।
हाथ पकड़ उठावत, दास लाल इन पर ॥३५॥

वल्लभदास छत्र पकड़ कर खड़े हैं और सिर पर घुमाते रहते हैं । इस समय लालदास जी हाथ पकड़कर बिठाते हैं ।

इन तखत के गोफने, बांधत मानक इस ठाम ।
दोए लाल बाई बांधत, एक बांधत घनस्याम ॥३६॥

इस तख्त पर जो चद्दर बिछी है, माणिक भाई आकर उसके किनारे तख्त के पाए से बांधते हैं । चद्दर के चारों कोनों पर फुम्मक लगे हैं । दो कोने लालबाई बांधती हैं और एक घनश्याम भाई बांधते हैं ।

Nijanand App

मानक सामिल रहत हैं, फूलबाई सुदामापुर से ।
सो फूलबाई रहत है, सरीख सब सेवा में ॥३७॥

इस सेवा में माणिक और सुदामापुर से आई फूलबाई भी शामिल रहती हैं । फूलबाई सब सेवा में शामिल रहती हैं ।

तखत साज सोने रूपे का, राखत हैं बुधसेन ।
सब सेवा में ठाढ़ा रहे, आवे जाए लेन देन ॥३८॥

तख्त को सजाने का सब साज सोने व चांदी का है, जिसको रखने की सेवा बुधसेन करते हैं । वह सब सेवा में हाजिर खड़े रहते हैं और भाग-भाग कर सामान लाकर देते हैं ।

सेवा लिखन हार की, स्याही देत बनाए ।
कूजा भरके पुकारहीं, कोई लेवे जो दिल चाह ॥३९॥

लिखने के लिए स्याही का कूजा भरकर बुधसेन खड़े हैं और आवाज देकर कहते हैं "जिसको स्याही चाहिए, ले लो ।"

लटके मटके राज चलके, आये बिराजे तखत ।
केसव संकर ले खड़े, मोरछल इन वखत ॥४०॥

आप धाम के धनी बहुत प्यार भरी चाल से चलकर तख्त पर आकर विराजमान हुए । केशव और शंकर भाई दोनों मोरछल झुलाने की सेवा में हाजिर खड़े हैं ।

पीछला बाकी दिन, रह्या घड़ी चार ।
धाम वतन चलन की, मोमिन करें विचार ॥४१॥

अब इस समय जब पिछला दिन चार घड़ी बाकी रह जाता है अर्थात् साढ़े चार बजे का समय होता है तब आप धाम के धनी श्री राजजी महाराज सब सुंदरसाथ को मूल मिलावा परमधाम जाने की चितवन कराते हैं ।

दोऊ बाजू भरके, आए के बैठा साथ ।
अरस अजीम पहुंचावने, हकें पकड़ें हाथ ॥४२॥

तख्त के दोनों तरफ सब सुन्दरसाथ चितवनी करने के लिए आकर बैठ गए । आप श्री जी साहिब सब सुन्दरसाथ को माया से निकाल कर साक्षात् परमधाम का अनुभव कराने के लिए अपनी कृपादृष्टि करते हैं ।

Nijanand App

श्री महाराजा आवत, सब सेवा में शामिल ।
अत सनेह सों सेवा करें, पाक दिल निरमल ॥४३॥

महाराजा छत्रसाल समय-समय पर आकर सब सेवा, पाक और साफ दिल से बड़े स्नेह के साथ करते हैं ।

जो सेवा सकुण्डल करी, अपने तन मन धन ।
अपना तन धन सोंप्या, तो कह्या अमीरूल मोमिन ॥४४॥

जिस प्रकार साकुण्डल (छत्रसाल जी) ने श्री जी के स्वरूप की पहचान करके युगल स्वरूप श्री राजजी और श्यामा जी के भाव से सेवा की और अपना तन, मन, धन सर्वस्व समर्पित किया, उसके समान कोई तुलना में आ ही नहीं सकता । यही पहचान करने के कारण ही श्री जी ने छत्रसाल जी को सब सुन्दरसाथ में श्रेष्ठ, सिरदार शब्द से सुशोभित किया ।

अरस की निमाज का, आए पहुंचा बखत ।
गोकुल अरज करत हैं, सामें होए तखत ॥४५॥

साढ़े चार बजे मूल मिलावे में ध्यान कर श्री राजजी महाराज के चरणों में चितवन करने का समय आ गया तो इस समय, गोकुल भाई तख्त के सामने आकर अपने प्राणों के प्रीतम धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के चरणों में अर्जी करते हैं ।

हम को इन खेल से, सिताब काढ़ो श्री राज ।
भए मनोरथ पूरन, रहया ना कोई काज ॥४६॥

हे हमारे धाम के धनी ! इस खेल को देख कर हमारी सब इच्छाएं पूरी हो गई हैं । अब कोई चाहना हमारी बाकी नहीं है, इसलिए हम को जल्दी माया से निकाल कर घर ले चलो ।

श्री धाम धनी सुनत हैं, ए बानी जो मकबूल ।
द्वाए जो मोमिनों की, होत है कबूल ॥४७॥

ऐसी अर्जी जो स्वीकार करने योग्य होती है, आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी सुनते हैं और ऐसी जो अर्जी मोमिनों की होती है वो श्री जी तुरन्त स्वीकार करते हैं ।

अरज करी एक भांत साथ नें, कई भांत धनी दिए सुख ।
खेल समेत बैठाए के धाम में, दोऊ ठौर धन धन किए सनमुख ॥४८॥

सुन्दरसाथ तो एक अर्जी करते हैं, पर धनी उसके हजार गुना, लाख प्रकार से सुख देते हैं । ऐसे सुन्दरसाथ जो माया में रहते हुए हर पल धनी के चरणों में ध्यान रखते हैं वो यहां भी धन्य-धन्य हैं और परमधाम में भी धन्य-धन्य हैं ।

Nijanand App

खास ढाल तलवार जो, दई पहिले मुरलीधर ।
कोई दिन भिखारी दास, कोई दिन गिरधर रहे पकर ॥४९॥

चितवन के समय चारों तरफ सुन्दरसाथ पहरे के लिए खड़े हो जाते हैं । सबसे पहले मुरली धर ढाल, तलवार पकड़ कर खड़े होने की सेवा करते हैं, फिर कुछ दिन भिखारी दास ने इस सेवा को किया और कुछ दिन गिरधर भाई ने ढाल पकड़ कर खड़े रहने की सेवा की ।

फेर दई लालदास को, सन्तदास खड़ा रहे ले ।
कबहूं दूजा भिखारी दास, पीछे बुध सेन करे ॥५०॥

फिर लालदास जी इस सेवा को करते हैं और सन्तदास जी भी सेवा में खड़े रहते हैं । कभी-कभी दूसरे भिखारीदास इस सेवा को करते हैं, फिर सबसे पीछे बुधसेन ने इस सेवा को किया ।

सूरत सिंह राखत हैं, तरकस तीर कमान ।
बरछी घनस्याम राखत हैं, करे खिजमत रेहेमान ॥५१॥

सूरतसिंह तरकस और तीर कमान रखने की सेवा करते हैं और बरछी लेकर खड़े होने की सेवा घनश्याम करते हैं । इस प्रकार इस समय यह सब सुन्दरसाथ अपने धाम धनी को रिझाने के लिए हजूरी बन कर खड़े हैं ।

श्री बाई जी पठे देत हैं, हाथ मकरन्द के ।
श्री राज के वास्ते भूषन, ल्यावत है नित ये ॥५२॥

श्री बाई जी राज इस समय मकरन्द दास के हाथ श्री जी को आभूषण पहनाने के लिए भेजती हैं और यह सेवा नित्य मकरन्द दास ही करते हैं ।

रकेबी रूपे की, भर ल्याए भूखन ।
महाराजा पहिनावत, लिए पकड़े हाथ मोमिन ॥५३॥

चाँदी की प्लेट भरकर आभूषण लाते हैं और भूषण पहनाने की सेवा महाराजा छत्रसाल जी अपने हाथ में प्लेट पकड़ कर करते हैं ।

माला दो मोतिन की, और उतरी कंचन ।
दोए सांकली सोने की, झलकत हीरा रोसन ॥५४॥

श्री जी के कंठ में दो मोतियों की माला पहनाई जाती है । नीचे सोने की पहनाते हैं और दो मालाएं (चैन), जिसके लॉकेट में हीरा नग जड़ा है एवं जिसका तेज झलकारों झलकार कर रहा है, पहनी हैं ।

Nijanand App

दुग दुगी दो जड़ाव की, करे मानक जोत अपार ।
महाराजा पहिनावत, ताकों क्यों कर कहूं सुमार ॥५५॥

दुगदुगी (लॉकेट) में दो नग जड़े हैं जिसमें लाल रंग की अपार शोभा है । महाराजा छत्रसाल इस युक्ति से पहनाते हैं कि उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

चन्द्रहार झलकत, चंपकली सिर नूर ।
कण्ठी पर कण्ठी सोहे, सो क्यों कर कहूं जहूर ॥५६॥

एक चन्द्रहार कण्ठ में पहनाया जाता है । उसके ऊपर चंपकली का हार पहनाते हैं । एक माला के ऊपर दूसरी माला इस तरह से शोभायमान है कि उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

मोतिन की कण्ठी बनी, तले मोती ऊपर मानक ।
चौखूना सोने मढो, सोभित है कण्ठ हक ॥५७॥

मोतियों की माला इस प्रकार से बनी है कि तले मोती, फिर माणिक, फिर मोती, फिर माणिक, इस प्रकार यह शोभा है और यह चौखूने नग सोने में मढ़े हुए हैं, जो श्री जी के कण्ठ में बहुत ही प्यारे लग रहे हैं ।

गिरद चन्द्रिका कमल ज्यों, लटकत पाग ऊपर ।
सिरे मोती लटकत, धरे हीरा जोत सिर पर ॥५८॥

और पाग के गिर्द चन्द्रिका कमल के फूल के समान सुशोभित है जिसके किनारे पर मोतियों की सरें लटक रही हैं और चन्द्रिका के मध्य में हीरे की जोत शोभायमान है ।

महाराजा पहिनावत, पोहोंची बांधी इन ठाम ।
हीरा मानक झलकत, ए महाराजा का काम ॥५९॥

महाराजा छत्रसाल हस्त कमल में इस समय पोहोंची बांधते हैं जिसमें हीरे और लाल नगों की झलकार का वर्णन नहीं हो सकता । आभूषण पहनाने की सेवा महाराजा छत्रसाल ही करते हैं ।

और अंगुरियों मुंदरी, आगे सब धरी ।
माफक बैठत अंगुरी, सो अंगीकार करी ॥६०॥

और सब अंगुलियों में अंगूठियां पहनाने के लिए प्लेट में सब रखी हैं । जो जिस उंगली में फिट आती है, उसी को पहनाने की सेवा छत्रसाल जी करते हैं ।

Nijanand App

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए चौथे पहर की विरत ।
अब कहूं पोहोर पांचमां, सुनियो तन मन हित ॥६१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी । इस प्रकार श्री पन्ना जी में उस समय सुन्दरसाथ ने अपने धाम धनी को रिझाने के लिए सायं ३ बजे से ६ बजे तक सेवा की जिसका वृत्तान्त आपको सुनाया है । अब पांचमा पोहोर जो सायं ६ से ९ बजे रात्रि तक होता है उस समय में जो सेवा सुन्दरसाथ ने की, उसे बहुत ही चाव से तन मन से सुनिए ।

(प्रकरण ६७, चौपाई ४०२८)

पांचमा पहर

अब कहूं पहर पांचमा, आया जब बखत ।
हुआ समें बैठन का, ऊपर इन तखत ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं - हे सुन्दरसाथ जी ! अब पांचवें पहर में, जो सायं ६ से ९ बजे तक का समय होता है आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी तख्त पर विराजमान होते हैं, सुन्दरसाथ ने किस प्रकार उनकी सेवा कर धाम धनी को रिझाया उसका वृत्तान्त सुनिए ।

लच्छो अरज करत हैं, राज पधारो कौन घाट ।
श्री राज उत्तर देत हैं, आज पधारें पाट ॥२॥

तब लच्छो बाई श्री जी के सामने आकर अर्ज करके पूछती है कि हे धनी ! परमधाम में जाग्रत होने के बाद आप हम कौन से घाट जाएंगे । तब श्री जी फुरमाते हैं कि परमधाम में उठने के बाद कृष्ण पक्ष अर्थात् अंधेरे पक्ष की एकम का दिन है इसलिए पाट घाट पधारेंगे ।

तखत बिछौने होत हैं, बिछावत बिहारी दास ।
तलाई ओछाड़ सूजनी, तकिए धरे मखमली खास ॥३॥

तख्त के ऊपर सेज्या सजाने की सेवा बिहारी दास करते हैं । सेज्या के ऊपर गद्दा, उस पर ऊछाड़ दसूती का चढ़ाया जाता है और तकिए मखमली रखे जाते हैं ।

इत जोड़े तखत के, गादी बिछौने होए ।
चारे गमा ते तान के, बिहारी दास धरें सोए ॥४॥

तखत के साथ में ही गादी बिछा कर सजाई जाती है । यह सेवा बिहारी दास जी करते हैं और गादी पर बिछौना खैंचकर साफ करके बिछाया जाता है ताकि कोई सलवट न रहे ।

Nijanand App